CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - B**	
	SEMI PRELIM - I	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड : 'क'	
A.1.		
(क)	भारत के संविधान में स्वीकृत सभी भाषाओं के मध्य एक ही भावधारा बहती है । रामायण और महाभारत को लेकर सभी भाषाओं में अद्‌भुत एकता है । संस्कृत और प्राकृतभाषा का साहित्य इनमें जड़ की तरह काम कर रहा है ।	**2**
(ख)	विंध्य को लाँघकर उत्तर भारत को दक्षिण भारत में मिलाने के तो बहुत प्रयास हुए, पर इस काम में सफलता बहुत कम मिली ।	**2**
(ग)	इस देश के प्राकृतिक ढाँचे में ही कोई ऐसी बात है जो सारे देश को एक शासन के अधीन लाने में बाधक है ।	**2**
(घ)	विविधता का सबसे बड़ा लक्षण है - अनेक भाषाओं का होना । इसके कारण उत्तर भारत के लोगों को दक्षिण में तथा दक्षिण भारत के लोगों को उत्तर भारत में कठिनाई होती है ।	**2**
(ङ)	विविधता में एकता ।	**1**
A.2.		
(क)	कैकेयी ने राम को मिलने वाला राज्य भरत को दिला दिया था और राम को चौदह वर्ष का वनवास दिलवा दिया था। उस अपराध के कारण वह अपने पर थूकने की बात कह रही है ।	**2**
(ख)	लोगों में माता-पुत्र के बारे में यही उक्ति प्रचलित है - पुत्र कुपुत्र भले ही हो जाए किंतु माता कभी कुमाता नहीं होती।	**2**
(ग)	रघुकुल की अभागी रानी थी - कैकेयी । उसने अपने पुत्र के लिए राज्य ; तथा राम के लिए चौदह वर्षों का वनवास माँगकर महास्वार्थ का परिचय दिया था ।	**2**
	खण्ड : 'ख'	
A.3.		
(क)	वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है। जब वही शब्द व्याकरणिय नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब वही शब्द पद बन जाता है।	**2**

(ख)	(i) उनके आने पर तुम छिप जाना।	1
	(ii) गौरव ने अक्षय कहा कि वह भी नेपाल चले	1
	(iii) वह पढ़ता भी है और काम भी करता है।	1
A.4.		
(क)	(i) कलाकुशल - तत्पुरुष समास	1
	(ii) यथासंभव - अव्ययी भाव समास	1
(ख)	(i) संसाररूपी सागर - कर्मधारय	1
	(ii) सात सौ दोहों का समाहार - द्विगु समास	1
A.5.		
(क)	(i) मुझे गरम दूध का एक गिलास दीजिए ।	1
	(ii) देश के सारे नागरिक कर्तव्य निष्ठ है ।	1
	(iii) रोगी मोहन को सेब काटकर खिलाओ ।	1
	(iv) देश शहीदों का सदा आभारी रहेगा ।	1
(ख)	(i) जब तक मनुष्य पर जिम्मेदारी नहीं आती तब तक उसे **आटे दाल का भाव** पता नहीं चलता। **मुहावरा -** आटे दाल का भाव मालूम होना ।	1
	(ii) **'एक ही राग अलापना'** - एक ही बात को बार-बार कहना	1
	खण्ड : 'ग'	
A.6.		
(क)	पुलिस कमिश्नर की नोटिस के बावजूद जनसंघर्ष की शुरुवात हो गयी । पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी । क्षितिज चटर्जी का सर फटने के बावजूद स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थी । स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में शामिल हुई । बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ गयी थी, फिर डंडे चलाने शुरू कर दिए । इसी कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया ।	2
(ख)	लोगों का मत था कि तताँरा की तलवार लकड़ी की होने पर भी उसमें अदभुत दैवीय शक्ति थी। निकोबारियों का यह मत है कि तताँरा की तलवार से कार - निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार निकोबार से आज 86 किमी दूर स्थित है । लोग यह मानते थे कि तताँरा अपने साहसिक कारनामे इसी तलवार के द्वारा कर पाता था ।	2
(ग)	शोमैन का अर्थ है - वह कलाकार जो अपने आप में एक फिल्मजगत हो, जो अपनी कलाकारी को जीवंत कर देता है । 'तीसरी कसम' राजकपूर के अभिनय जीवन का वह मुकाम है, जब वह एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे । उनका अपना व्यक्तित्व एक किंवदंती बन चुका था ।	1

A.7.	शैलेंद्र एक आदर्शवादी भावुक कवि थे, जिसे अपार संपत्ति और यश की इतनी कामना न थी जितनी आत्मसंतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी । शैलेन्द्र ने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया । उनके गीत भाव - प्रवण थे, दुरूह नहीं । 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' यह गीत शैलेन्द्र ही लिख सकते थे । शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए, उनके गीतों की यही विशेषता थी।	**5**
	अथवा	
	छोटे भाई की उम्र मात्र नौ साल थी । उसकी रूचि खेलकूद में अधिक थी । इस उम्र के बच्चे अपना भला - बुरा नहीं समझ सकते इसलिए इन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है । कुछ बच्चे डाँट - फटकार से समझते हैं तो कुछ प्यार से । सिर्फ डाँट - फटकार से कोई अव्वल नहीं आता । संत तुलसीदास ने यदि ''बिन भय होय न प्रीति' कहा है तो सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद यह कहा था कि ''किसी के हृदय को तलवार से नही जीता जा सकता। अव्वल आने के लिए मन में दृढ़ इच्छा की आवश्यकता होती है ।'' डाँट-फटकार से कोई अव्वल नहीं आ सकता। समय के अनुसार डाँट और प्यार दोनों ही नौ साल के बच्चे के लिए आवश्यक है, लेकिन सिर्फ डाँट - फटकार से ही छोटा भाई कक्षा में अव्वल नहीं आया ।	**5**
A.8.		
(क)	मीराबाई चाकरी करने के बहाने रोज सुबह बाग में जाकर श्रीकृष्ण के दर्शन करेंगी साथ ही उन्हें प्रेम-भाव, भक्ति रूपी संपत्ति की प्राप्ति होगी । इन कारणों से मीराबाई श्याम की चाकरी करना चाहती हैं । इस प्रकार मीरा चाकरी के बहाने कृष्ण की निकटता पा सकने में सफल हो जाएँगी ।	**2**
(ख)	कवि के अनुसार मन के भावों की अभिव्यक्ति में नेत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है । गुरुजनों से घिरे हुए भवन में नायक-नायिका नेत्रों द्वारा बात कर अपने भावों को प्रकट कर रहे हैं । नायक अपने नेत्रों से मिलने की इच्छा व्यक्त करता है, नायिका इंकार कर देती है । नायिका के इंकार करने पर नायक रीझ उठता है इस पर नायिका भी खींझ उठती है । कुछ ही समय में दोनों के नेत्र फिर मिलकर मुस्कुरा उठते हैं । नायिका के नयनों में लाज की छाया घिर जाती है ।	**2**
(ग)	मीठी वाणी बोलने से सुनने वालों को शांति प्राप्त होती है। वे विनय और आदर-भरे वचन सुनकर सुखी होते हैं। इससे वक्ता भी शीतलता अनुभव करता है। जब वह अहंकारशून्य वचन कहता है तो उसकी मिठास उसके तन को भी ठंडक पहुँचाती है।	**1**
A.9.	पावस ऋतु आने पर प्रकृति के रंग हर क्षण बदलने लगते है । कभी ऐसा लगता है मानो पर्वत हजारों आँखों से तालाब रूपी दर्पण में अपना मुख निहार रहा है । कभी लगता है कि ये झरने पर्वतों का स्तुतिगान कर रहे हैं । कभी लगता है कि पूरा पहाड़ ही बादलों के पंख लगाकर आकाश में उड़ चला है । कभी लगता है कि तालाब जल गया है और उसका धुआँ आकाश में उठ रहा है । इस प्रकार निरंतर जादू भरे खेल चल रहे हैं ।	**5**
	अथवा	

	'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्‌भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है । वह मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद आदि संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहता है । वह मनुष्य में उदारता के भाव भरना चाहता है । कवि चाहता है कि हर मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे । वह दुखियों, वंचितों और ज़रूरतमंदों के लिए बड़े–से–बड़ा त्याग करने को भी तैयार हो । वह कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अटूट त्याग से प्रेरणा ले । वह अपने मन में करुणा का भाव जगाए । वह अभिमान, लालच और अधीरता का त्याग करे । एक-दूसरे का सहयोग करके देवत्व को प्राप्त करे । वह हँसते–खेलते जीवन जिए तथा आपसी मेलजोल बढ़ाने का प्रयास करे । उसे किसी भी सूरत में अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए ।	**5**
A.10.	हरिहर काका अनपढ़ थे । उन्हें इस बात का अच्छी तरह ज्ञान था की सभी की नजर उनकी जमीन पर है । महंत और अपने भाईयों के स्वार्थी व्यवहार को देखते हुए, उन्होंने यह सोच लिया था कि वे एक बार मरना पसंद करेंगें लेकिन रमेसर की विधवा की तरह गलती नहीं करेंगे । रमेसर की विधवा को बहला-फुसलाकर उसके भाईयों ने सारी जमीन अपने नाम लिखवा ली और उसे घुट-घुटकर मरने के लिए छोड़ दिया । उन्होनें इसी कारण अपने भाईयों से कह दिया था कि वे जीते-जी जमीन किसी के नाम नहीं करेंगे । मरने के बाद जमीन उनके भाईयों के नाम हो जाएगी । इस प्रकार हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते थे ।	**5**
	अथवा	
	लेखक को जितनी भी मनोविज्ञान की जानकारी है उसके अनुसार आगे की श्रेणी की कुछ मुश्किल पढ़ाई और नए मास्टरों की मार-पीट का भय ही कहीं भीतर जमकर बैठ गया था । सभी अध्याय नए न होते थे परंतु दो-तीन हर साल ही वह होते जोकि छोटी श्रेणी में नहीं पढ़ाते थे । कुछ ऐसी भी भावना थी कि अधिक अध्यापक एक साल में 'हरफनमौला बन जाने की (विद्‌यार्थियों) अपेक्षा करते थे । उनकी आशाओं पर पूरा न उतरने पर चमड़ी उधेड़ देने को तैयार रहते । उन्हीं कारणों से बालमन उदास हो उठता था ।	**5**
	खण्ड : 'घ'	
A.11. (क)	**कृषि मेला** भारत एक कृषि प्रधान देश है । कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत में कृषि - मेलों का भी आयोजन होता रहता है। कृषि प्रदर्शनी को कृषि मेला' भी कहा जा सकता है । जब भारत परतंत्र था उस समय भारत में खेती-बारी का ढंग बहुत पुराना था - वही पुराने हल और बैलों की जोड़ी । खेती-बारी में पशुओं से हल चलाने, कुएँ से पानी निकालने आदि का काम लिया जाता था । जगह-जगह गाँवों में ''पैंठ' (साप्ताहिक बाजार) लगती थी । 'पैंठ' में दूर-दूर से लोग आते थे और पशुओं का क्रय विक्रय करते थे। किसानों के लिये कृषि मेलों का आयोजन किया गया था । यह मेला नई दिल्ली के प्रगती मैदान में लगा था । हम मेले के प्रत्येक मंडप में गए । हमने इन मंडपों में अच्छे बीजों, तरह-तरह की खादों, सिंचाई के साधन नलकूप, नये ढंग के कृषि यंत्र ट्रैक्टर आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त की । हमें यह भी बताया गया कि अब सरकार किसानों की कृषि सुधार के लिए हर संभव सुविधा दे रही है । कम व्याज पर, आसान	

किश्तों पर कृषि यन्त्र खरीदने के लिए धन ऋण के रूप में बैंकों से मिल सकता है । मेले में मनोरंजन के साधनों की कोई कमी नहीं थी। इस तरह हमनें कृषि मेले में जहाँ कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त की, वहाँ मेले की चहल-पहल का भी भरपूर आनंद लिया । **5**

(ख)

नौका - विहार :

इस शरद अवकाश को बिताने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ - धरती के स्वर्ग कश्मीर में । मैं अपने परिवार के सदस्यों के साथ कश्मीर की सैर को चल पड़ा । कश्मीर को प्रकृति ने एक-से एक सुंदर दृश्य प्रदान किए हैं ।

चाँदनी रात थी । झील की नीली दिखाई पड़ने वाली जलराशि पर रंग-बिरंगी बिजली के बल्बो की आकर्षक छाया मन को मोह रही थी । आस-पास तैरते शिकारों से आने वाली धीमी-धीमी आवाजें झील की शांति को भंग कर रही थीं । मुझे गुप्तजी की ये पंक्तियाँ स्मरण हो आईं ।

'चारु चंद्र की चंचल किरणे खेल रही है, जल थल में । स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अंबर तल में' हमारी नाव मंथर गति से चल रही थी । पानी में छप-छप की मधुर ध्वनि हो रही थी । हमारी नाव जल पर तैर रही थी । यह नौका विहार मुझे आजीवन याद रहेगा । **5**

(ग)

एड्स की चुनौती :

'एड्स' नामक बीमारी एच.आई.वी नामक विषाणु से होती है । एड्स ऐसे बहुत से लक्षणों का समूह है जिससे शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति कम होती है और रोगी निरंतर मृत्यू की ओर बढ़ता चला जाता है ।

एड्स एक ऐसा रोग है जो एच.आई.वी नामक वायरस विषाणु के द्वारा फैलता है । ये वायरस अत्यंत सूक्ष्म और बीमारी उत्पन्न करने वाले जीव है । इस वायरस के शरीर में प्रवेश कर जाने के बाद मरीज की रोगों से लड़ने की क्षमता समाप्त होने लगती है ।

एड्स मुख्यत: एक यौन रोग है । यह मुख्य रूप से चार कारणों से होता है ।

1. एच.आई.वी.ग्रस्त व्यक्ति के साथ शारीरिक संबंध रखने से ।
2. डॉक्टरों द्वारा प्रदूषित सुइयों का प्रयोग करने, मादक पदार्थों का सेवन करने वालों द्वारा दूषित सूइयाँ इस्तेमाल करने से।
3. 'संक्रमित रक्त' या 'रक्त पदार्थों' को चढ़वाने से ।
4. संक्रमित माता द्वारा नवजात शिशु को स्तनपान कराने से ।

इस रोग से ग्रस्त रोगी के शरीर में कमजोरी बढ़ती जाती है । उसके गर्दन, बगल या जाँघो की ग्रंथियों में सूजन आ जाती है । उसे लगातार बुखार रहने लगता है । मुँह तथा जीभ पर सफेद चकते पड़ जाते है। हमें एड्स ग्रस्त व्यक्ति का मनोबल बढ़ाना चाहिए । यह एक घातक बीमारी है । इसका अभी तक कोई उपचार नहीं है, अत: बचाव हेतु इसके बारे में संपूर्ण जानकारी रखना आवश्यक है । **5**

A.12.

(क)

क. ख. ग.
.... पता,
दिनांक - 15-3-2016
प्रबंधक
हिंदी बुक सेंटर इंदौर

विषय : कटी- फटी पुस्तकों की वापसी ।

महोदय

बड़े खेद के साथ आपकों सूचित करना पड़ रहा है कि आपने मुझे जो निम्नलिखित पुस्तकें भेजी हैं, वे कटी-फटी तथा पुरानी है । यह व्यवहार आपकी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है । मैं ये पुस्तकें वापस लौटा रहा हूँ । आप शीघ्र ही इनकी जगह नई पुस्तकें भिजवाएँ । आपने जो मेरा समय नष्ट किया है, उसकी भरपाई नहीं हो सकती । अब कृपया पुस्तकें शीघ्र भेंजे । पुस्तके निम्नलिखित हैं -

कामायनी : जयशंकर प्रसाद
उर्वशी : दिनकर

भवदीय
क. ख. ग. **5**

अथवा

सेवा में,
प्रधानाचार्य
नवनिकेतन पब्लिक स्कूल,
जम्मू ।

विषय – सम्मानित करने के लिए प्रार्थना पत्र ।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने सहपाठी रविकुमार के प्रशंसनीय एवं साहसिक व्यवहार की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ । कल चौथे पीरियड में मनोज कुमार की नाक से खून बहने लगा । सभी उसे देखने लगे, पर रवि ने तत्काल उसे लिटाया और अपना रुमाल भिगोकर उसकी नाक पर रखा । उसकी नाक ऊपर से दबाई । इससे थोड़ी देर में उसका खून रुक गया, फिर मनोज कुमार कुछ देर में सामान्य हो गया । मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप रवि को इस साहसिक एवं प्रशंसनीय व्यवहार के लिए सम्मानित करें । इससे अन्य छात्रों को प्रेरणा मिलेगी ।

सधन्यवाद !
आपका आज्ञाकारी,
भरत
दिनांक **5**

A.13.

खेल परिषद
डी.ए.वी. स्कूल
वाराणसी

हॉकी टीम का चयन
सूचना

हमारे विद्यालय की हॉकी टीम का चयन 15 सितम्बर, 2017 को शाम 5 बजे खेल के मैदान में होगा । जो खिलाड़ी टीम में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे चयन के लिए टी शर्ट और नेकर पहनकर ठीक समय पर पहुँचें । हॉकी और गेंद स्कूल की ओर से उपलब्ध कराई जाएगी ।

दिनांक : 10 सितम्बर, 2017

सूर्यप्रताप सिंह
सचिव, खेल परिषद **5**

अथवा

नवोदय विद्यालय,
जौनपुर
समाज सेवा परिषद

सूचना

हमारे विद्यालय की समाज सेवा परिषद नगर के अनाथ बच्चों के आवास 'बाल ग्राम' में जाकर उनकी स्थिति और आवश्यकता को समझने के लिए एक कार्यक्रम बनाने जा रही है । जो सेवाभावी विद्यार्थी इसमें रुचि रखते हैं वे अपने नाम समाज सेवा परिषद के कार्यालय में 30 अक्टूबर तक दे दें ।

दिनांक : अक्टूबर 15, 2017

राकेश गुप्ता
अध्यक्ष, समाज सेवा समिति **5**

A.14.

राधिका – हाय सुरेखा! कैसी हो?
सुरेखा – मैं अच्छी हूँ, तू कैसी है?
राधिका – मैं भी अच्छी हूँ ।
सुरेखा – सुना है दिन-रात किताबों के पीछे हाथ धोकर पड़ी रहती है ।
राधिका – कहाँ पढ़ रही हूँ ? मेरे पिताजी कहते हैं, ऐसे घूमती रही तो डॉक्टर तो क्या मास्टरनी भी नहीं बन पाएगी ।

	सुरेखा – अच्छा! क्या मास्टरनी ऐसे ही बन जाती हैं? राधिका – भाई, डॉक्टरी के लिए तो अधिक मेहनत करनी ही पड़ती है! सुरेखा – तो क्या मैं मेहनत करना छोड़ दूँ! मुझे तो अध्यापिका बनना है । राधिका – भई तू ठहरी समाज-सेविका! तुझे तो लोगों का चरित्र सुधारना है । इसलिए तू बनेगी तो आदर्श अध्यापिका बनेगी । तू कैसे मेहनत करना छोड़ेगी? सुरेखा – सच कहूँ! ये दोनों ही काम सेवा के हैं । डॉक्टर तन की देखभाल करता है तो अध्यापक मन और बुद्धि की । राधिका – क्यों, क्या डॉक्टर बिगड़ी हुई बुद्धि वाले मरीज़ों का इलाज नहीं करते ? सुरेखा – डॉक्टर तो बिगड़ने पर इलाज करते हैं । परंतु अध्यापक उन्हें बिगड़ने ही नहीं देते । वे उन्हें संस्कार देते हैं । राधिका – सच, अध्यापक का दर्जा ईश्वर के बराबर होता है । सुरेखा – और डॉक्टर! वह संकट में ईश्वर का अवतार प्रतीत होता है! राधिका – तो फिर, हम दोनों ही ईश्वर के दूत बनकर काम करेंगे क्यों ? सुरेखा – हाँ, अगर हर आदमी अपने काम को ईश्वर का काम मानकर करे तो वह काम पवित्र हो जाता है ।	5
	अथवा	
	अखिलेश – हलो राजेंद्र! बधाई हो! राजेंद्र – धन्यवाद! अखिलेश – पूरे बोर्ड में प्रथम आकर तूने कमाल कर दिया या! बहुत बधाई! राजेंद्र – धन्यवाद अखिलेश! मुझे सचमुच खुद विश्वास नहीं हो रहा । अखिलेश – परंतु मुझे खुशी है कि मेरा विश्वास आज सच हो गया! मैं कहा करता था न कि एक-न-एक दिन तू कोई कारनामा ज़रूर करेगा । राजेंद्र – बस यह तेरे जैसे दोस्तों और भला चाहने वालों की दुआएँ हैं । वरना मैं किस योग्य हूँ! अखिलेश – यही! यही तो बात मुझे तेरा दीवाना बना देती है । तुझमें जो विनम्रता है, मैं इसका कायल हूँ । राजेंद्र – भाई अखिलेश! मैं जानता हूँ! मेरे से योग्य कितने ही लड़के-लड़कियाँ और हैं । मेरा भाग्य है कि मैं प्रथम आ गया । कई लड़के-लड़कियाँ दो-दो नंबरों से मेरे पीछे हैं । अखिलेश – भगवान करे! तू यशस्वी बने । माता-पिता को मेरी ओर से बधाई देना! राजेंद्र – ज़रूर-ज़रूर । अखिलेश – अरे यह तो बता! मिठाई कब खिलाएगा ? राजेंद्र – जब तेरे पास वक्त हो । अभी चल! अखिलेश – चल! खाने के लिए तो मैं तैयार ही रहता हूँ ।	5

A.15.

विशेष

हिंदी व्याकरण

कक्षा 6.7 तथा 8 के विद्यार्थियों के लिए विशेष पुस्तकें

- व्याकरण समझाने के सरल और रोचक उपाय !
- उदाहरणों का विपुल भंडार!
- गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तरों का समावेश!

शत प्रतिशत अंक पाने के लिए

विशेष हिंदी व्याकरण ही खरीदें! **5**

अथवा

इंजीनियर बनना हो या डॉक्टर

प्रवेश-परीक्षा

की सुनिश्चित तैयारी के लिए

प्रवेश लीजिए

'उत्कर्ष'

संस्थान में!

- गत 20 वर्षों से हज़ारों इंजीनियरों/डाक्टरों का प्रवेश-प्रशिक्षण ।
- लिखित सामग्री तथा नियमित परीक्षाओं की व्यवस्था ।
- योग्यतम प्रशिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन ।

संपर्क करें

35-R, कलानगर, बांद्रा, मुंबई ।

संपर्क : 09768343291 **5**

❖❖❖❖